

पाठ-6

महादेवी वर्मा

(छायावादी काव्यधारा की प्रसिद्ध कवयित्री)

जीवन परिचय— छायावाद के चार स्तम्भों में से एक महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में फर्रुखाबाद, उ. प्र. में हुआ। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा तथा माता श्रीमती हेमरानी थी। इनका विवाह 12 वर्ष की अल्पायु में डा. स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ। इन्होंने सन् 1933 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम.ए. किया। इसके बाद वहीं महिला विद्या पीठ की प्राचार्या बनी। इनका देहावसान 1987 में हुआ।

रचनाएँ — काव्यग्रन्थ — 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' व 'दीपशिखा' आदि।

गद्य रचनाएँ— 'पथ के साथी', 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', व 'श्रृंखला की कड़ियाँ' आदि।

काव्यगत विशेषताएँ — महादेवी को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है इनके काव्य में रहस्यवाद की छाप है। उन्होंने अपनी प्रेमानुभूति में अज्ञात, असीम प्रियतम को संबोधित किया है। जिसके कारण इन्हें रहस्यवादी कवयित्री कहा जाता है। लाक्षणिकता, संगीतात्मकता, चित्रात्मकता, रहस्यवाद, काल्पनिकता तथा प्रकृति सौंदर्य इनके काव्य की विशेषता है। बिम्बों और प्रतीकों की सुन्दर योजना है।

महादेवी की भाषा स्वच्छ, कोमल, मधुर सुसंस्कृत तथा तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली है। इनकी भाषा में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का सटीक प्रयोग है।

जाग तुझको दूर जाना

प्रस्तुत गीत महादेवी की प्रसिद्ध रचना 'सांध्यगीत' से लिया गया है। यह एक जागरण गीत है जिसमें कवयित्री ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए भारतीय वीरों का राष्ट्रीय विघ्न बाधाओं और कठिनाइयों की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य पर निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी गई है। कवयित्री ने अपने स्वर्णिम अतीत और साहसी, निडर और कर्मवीर महापुरुषों की याद दिलाते हुए व उनसे प्रेरणा लेते हुए निरंतर लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ बढ़ने की प्रेरणा दी है।

कवयित्री ने देशवासियों को विषम परिस्थितियों, सांसारिक बन्धनों, व मोह-माया से अप्रभावित होते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी है। कवयित्री ने आत्मा

की अमरता का ज्ञान कराते हुए मृत्यु से न डरने की सलाह दी है। कवयित्री ने पतंगे का उदाहरण देकर बलिदान का महत्व समझाया है। कवयित्री का कहना है कि देशवासियों को बलिदान के मार्ग पर अपनी कोमल भावनाओं को बलिदान करना होगा।

काव्य—सौंदर्य

भावपक्ष— कवयित्री ने विघ्न बाधाओं, मुसीबतों और विषय परिस्थितियों में भी निरंतर लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। स्वाधीनता की चाह रखने वाले विपरीत परिस्थितियों से विचलित न होकर निरंतर आगे बढ़ते जाते हैं।

कवयित्री ने आत्मा की अमरता और भारतीयों की दृढ़ता व शक्ति—सामर्थ्य की याद दिलाई है।

शिल्प—सौंदर्य

1. तत्सम शब्द प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।
2. ओज गुण व गीत शैली में लिखा गीत है प्रश्न शैली भी अपनाई गई है
3. लक्षणा शब्द —शक्ति प्रयुक्त हुई है।
4. वीर रस में लिखा उद्बोधन गीत है
5. 'हिमगिरि के हृदय', 'बाधा बनेंगे', 'मधुप की मधुर' और 'मदिरा माँग' में अनुप्रास अलंकार है।
'जीवन—सुधा' में रूपक तथा 'सो गई आँधी' में मानवीकरण अलंकार है।
'सजेगा आज पानी' में श्लेष है।
6. बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता किसे सम्बोधित करते हुए लिखी है?
उत्तर— इस कविता में कवयित्री देशवासियों को स्वाधीनता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा देती हैं। यह एक जागरण गीत है, उस समय देशवासी आलस्य में पड़े थे। उन्हें जगाने की आवश्यकता थी। कवयित्री उन्हें उनका पथ निर्देशित कर मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति सचेत करती हैं।
2. मोम के बंधन और तितलियों के पर का प्रतीकार्थ लिखिए।
उत्तर— मोम के बंधन — इसमें पारिवारिक मोह के बंधन का अर्थ निहित है।

तितलियों के पर— इसमें सुंदर युवतियों के आकर्षण जाल (बहुरंगी पंख) का अर्थ निहित है।

अभ्यास प्रश्न

1. कविता में 'अमरता—सुत' किसे और क्यों कहा गया है?
2. कविता में कैसी हार को 'मानिनी जय की पताका' के रूप में स्वीकार किया गया है।
3. 'पतंगा' का उदाहरण प्रस्तुत कर कवयित्री भारतीय वीरों से क्या कहना चाहती है।
4. 'तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना' का आशय स्पष्ट करें।
5. नाश के पथ पर अपने चिह्न छोड़ने का क्या तात्पर्य है?
6. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता का मूल भाव क्या है?
7. कवयित्री किस मोहपूर्ण बंधन से मुक्त होकर मानव को जागृति का सन्देश दे रही है?
8. स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी को किन गुणों का विस्तार करना चाहिए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. 'सुधा और 'मदिरा' प्रतीकों को स्पष्ट कीजिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य—सौंदर्य लिखिए—
 - क) विश्व का क्रंदन.....अपने लिए कारा बनाना।
 - ख) कह न ठंडी.....सजेगा आज पानी।
 - ग) है तुझे अंगार.....कलियाँ बिछाना।

सब आँखों के आँसू उजले

'सब आँखों के आँसू उजले' इस कविता में महादेवी वर्मा ने प्रकृति के विभिन्न प्रतीकों द्वारा मानव जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। यहाँ प्रकृति के उस स्वरूप की चर्चा की गई है, जो सत्य है, यथार्थ है और मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करता है। अपनी मानव प्रकृति में परिवर्तन लाए बिना दूसरों का कल्याण करने का संदेश यहाँ निहित है।

कवयित्री ने सभी के आँसुओं को उजला बताया है, क्योंकि वे मन की सत्य भावनाओं के प्रतीक हैं। सृष्टि के सभी पदार्थ ईश्वरीय सत्ता से प्रभावित हैं। इसलिए

सभी पदार्थों की त्यागमयी भावना से उत्पन्न करुणा और वेदना भी अंततः जीवन को उज्ज्वलता प्रदान करती है। अतः आँसुओं को उजला कहना सार्थक एवं उपयुक्त है।

सपनों को सच बनाने के लिए मनुष्य को जीवन में आने वाली कठिनाओं और सुख-दुख का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। दीपक की तरह जलना और फूलों की तरह खिलना आना चाहिए एक ही परमसत्ता का अंश भिन्न-भिन्न पदार्थों में भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देता है। कोई भी वस्तु अपनी-अपनी प्रकृति के अनुरूप साधन अपनाकर ही अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करती है। इसी तथ्य को कवयित्री ने अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है।

छायावादी कवियों ने प्रकृति को मानवीय चेतना और संस्कार से युक्त माना है। यही कारण है कि छायावादी कविता में प्रकृति मानवीय व्यवहार से परिपूर्ण है।

अभ्यास-प्रश्न

1. महादेवी वर्मा ने 'आँसू' के लिए 'उजले' विशेषण का प्रयोग किस सन्दर्भ में किया है और क्यों?
2. सपनों को सत्य रूप में ढालने के लिए कवयित्री ने किन यथार्थपूर्ण स्थितियों का सामना करने को कहा है?
3. 'नीलम मरकत के संपुट दो, जिनमें बनता जीवन मोती' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रकृति किस प्रकार मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है?
5. 'सपने-सपने में सत्य ढला' के आधार पर कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।
6. निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:-
क) आलोक लुटाता वह कब फूल खिला।
ख) नभ तारक-सा.....हरिक पिघला।

व्याख्या हेतु सहायक बिंदु-

महादेवी जी स्पष्ट करती हैं कि ईश्वर ने भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई हैं। सभी के कार्य अलग-अलग होते हैं, परन्तु सभी वस्तुओं में दूसरों के कल्याण के लिए त्यागमयी भावना का गुण होना चाहिए। दीपक जलकर और फूल खिलकर यह कार्य करता है।

पर्वत और सागर दोनों ही पृथ्वी को जल प्रदान करते हैं, फिर भी दोनों अपनी प्रकृति नहीं बदलते। सागर का हृदय कभी पत्थर—सा कठोर नहीं बनता और पर्वत कभी अपने कठोर तन को नहीं बदलता।

हीरे को अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए खंडित होना पड़ता है और सोने को आग में तपना पड़ता है। सोना न तो कभी टूटकर और ना ही हीरा आग में तपकर अपने आकर्षण और सौंदर्य को बनाए रख पाते हैं। अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु अपनी—अपनी प्रकृति के अनुरूप ही साधन अपनाकर अपने अनुपम सौंदर्य और मूल्य को बनाए रख सकती है।

नीलम (रत्न) का आभास देता नीला आकाश और मरकत (पन्ना) जैसी दिखने वाली हरी—भरी विस्तृत धरती के द्वारा बीच का बना स्थान दोना (अंजलि) जैसा प्रतीत होता है। दोने जैसे इस संसार में सभी प्रकार का जीवन पनपता है, जो किसी सीपी के अंदर पलने वाले मोती की तरह स्वच्छ, पवित्र और सौंदर्यमयी है। समस्त सृष्टि में एक ही परमसत्ता का अंश विद्यमान है। जो अंश आकाश में बिजली और बादल का रूप धारण कर प्रस्फुटित होता है।

कवयित्री कहती है कि जो आकांक्षाएँ मेरे भीतर बनती बिगड़ती हैं, वैसी ही दूसरे प्राणी भी अपने भीतर महसूस करते हैं। जलते, खिलते और बढ़ते हुए इस संसार के सभी जड़—चेतन पदार्थों में एक ही परमसत्ता का प्राण स्पंदित होता है। कवयित्री स्पष्ट करती है कि पीड़ा की अनुभूति में, सुख का अहसास में, निरंतर आगे बढ़ती हुई सृष्टि के हर जड़—चेतन पदार्थ में एक ही प्राण समाया हुआ है। एक ही परमसत्ता संपूर्ण सृष्टि में समान रूप से व्याप्त है यही कारण है कि प्रत्येक सपने (वस्तु के अस्तित्व) में एक ही सत्य आभासित होता है।

काव्य सौंदर्य

भावपक्ष—इस कविता में संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त प्रकृति के माध्यम से जीवन की व्याख्या की गई है।

प्रकृति के अनेक उपादानों (दीपक, फूल, पर्वत और सागर आदि) के माध्यम से जीवन में त्यागमयी भावना को रेखांकित किया गया है। सृष्टि के कल्याण के लिए हमें निश्चल भाव से अपने स्वभाव से परिवर्तन किए बिना अपना जीवन दूसरों के लिए उत्सर्ग करना होगा। ईश्वर सर्वव्यापक है। सृष्टि के प्रत्येक जड़—चेतन पदार्थ में एक ही परमसत्ता विद्यमान है।

शिल्प सौंदर्य—1. भाषा तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।

2. पूरी कविता में मानवीकरण अलंकार है।

3. चित्रात्मकता एवं संगीतात्मकता है।

4. भावानुकूल शब्दों का प्रयोग है। अतः भाषा में सरसता, सरलता और लालित्य है।
5. 'सबके सपनों में सत्य', केशर-किरणों और 'रंग-रूप' में अनुप्रास अलंकार है।
6. 'घुल-घुल', 'शत्-शत्' और 'सपने-सपने' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
7. जीवन-मोमी, करुणा-जल में रूपक अलंकार है।
8. नभतारक-सा, केशर-किरणों-सा में उपमा अलंकार है।
9. नीलम, भरकत, संपुट, जीवन-मोती आदि प्रतीकों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 1. प्रकृति किस प्रकार मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है।

उत्तर— प्रकृति के कार्यों द्वारा मनुष्य की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य आलस्य छोड़कर संघर्ष पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित हो जाता है। फूलों का मरकंद, दीपक की लौ, झरनों का चंचल होकर बहना, प्रकृति का करुणा-जल, नभ के तारे, विद्युत मेघ, अंकुरण आदि सभी उपादान मनुष्य को संघर्ष करके लक्ष्य तक पहुँचाने की प्रेरणा देते हैं।